ओ३म्

आर्य मार्तण्ड

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजापार्क, जयपुर

वर्ष 97 अंक 20 पृष्ठ 16 मूल्य ₹5/- जुलाई द्वितीय प्रकाशन 21 जुलाई से 04 अगस्त, 2023

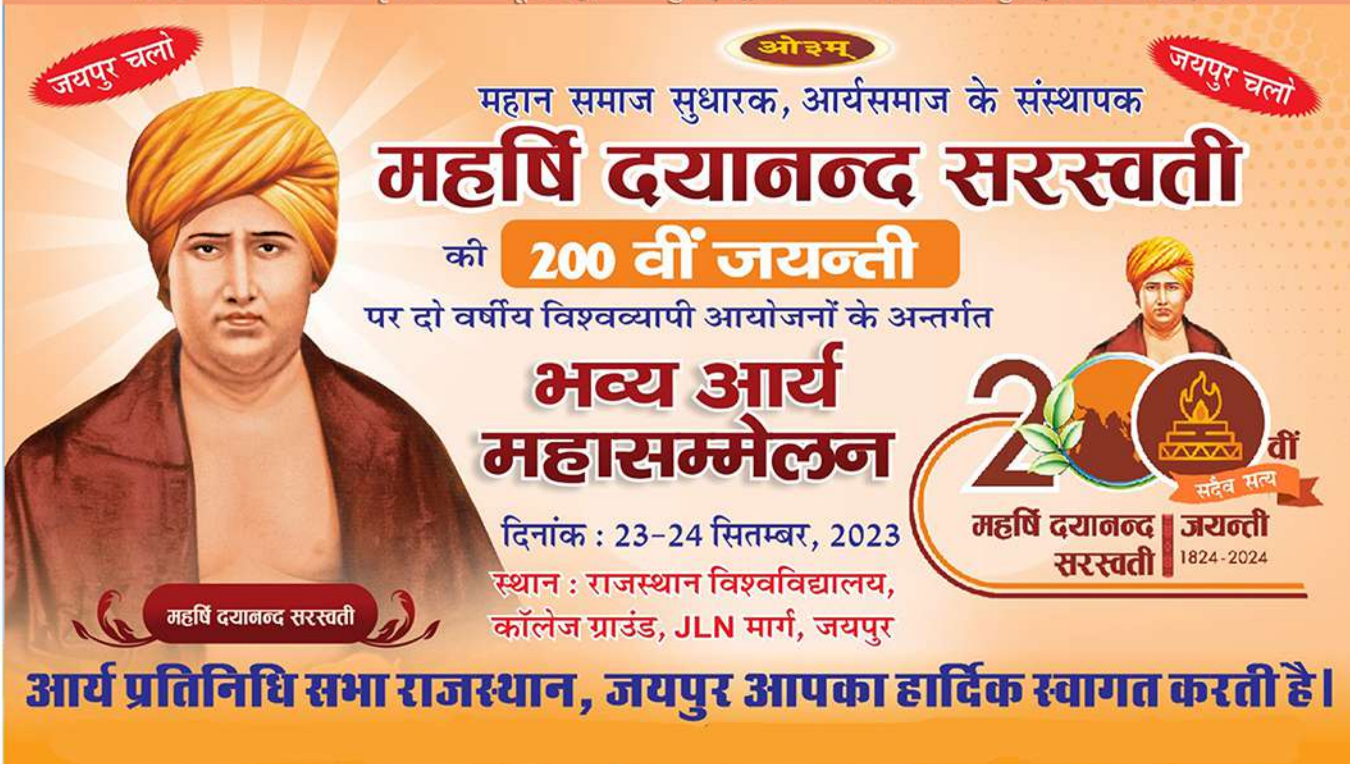

आर्य महासम्मेलन के पत्रक का विमोचन करते हुए आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान् आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक– भीनमाल, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान किशनलाल गहलोत, पूर्व राजनयिक डॉ मोक्षराज, सभा उप प्रधान, उदयपुर सम्भाग– नरदेव आर्य, वेद मंदिर उपाचार्य विशाल आर्य, मधुलिका शास्त्री, ब्र. ओम् एवं ब्र. रामचंद्र ।

आर्य संस्थाओं को आमंत्रण आरम्भ

पूर्व लोकायुक्त न्यायमूर्ति श्री सज्जन सिंह कोठारी को दिया न्यौता

आर्यसमाज आदर्शनगर, राजापार्क के कार्यकारी प्रधान रवि नैयर, पुरोहित जानकी प्रसाद आदि को न्यौता देते हुए डॉ. मोक्षराज

आर्यसमाज मोती कटला, जयपुर के प्रधान अशोक कुमार शर्मा को न्यौता देते हुए प. जीव वर्धन शास्त्री एवं डॉ. मोक्षराज

आर्यसमाज जनता कॉलोनी, आदर्शनगर के पुरोहित पं. देव व्रत शास्त्री, को न्यौता देते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री जीव वर्धन शास्त्री

आर्यसमाज, बगरु के माननीय प्रतिनिधि डॉ. सुधीर कुमार शर्मा को न्यौता देते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री जीव वर्धन शास्त्री साथ में हैं कार्यालय प्रभारी डॉ. रमाशंकर शिरोमणि

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, बीकानेर के प्रधान गोवर्धन सिंह चौधरी को न्यौता देते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री जीव वर्धन शास्त्री

आर. एन. आई. नं. 10471/60

ओ३म्

आर्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राज. का मुखपत्र

श्रावण, शुक्लपक्ष, तृतीया, सम्वत् 2080, कलि सम्वत् 5124, दयानन्दाब्द 199, सृष्टि सम्वत् 01,96,08,53,124

संरक्षक

1. डॉ. रमेशचन्द गुप्ता, अमेरिका
2. श्री दीनदयाल गुप्त (डॉलर फाउन्डेशन)

प्रेरणा स्रोत

1. श्री विजयसिंह भाटी
2. श्री जयसिंह गहलोत

सम्पादक

1. श्री जीव वर्धन शास्त्री

परामर्शक

1. डॉ. मोक्षराज

सम्पादक मण्डल

1. डॉ. सुधीर कुमार शर्मा 2. श्री अशोक कुमार शर्मा
3. डॉ. सन्दीपन कुमार आर्य 4. श्री नरदेव आर्य
5. श्री बलवन्त निडर 6. श्री ओमप्रकाश आर्य

आर्य मार्तण्ड

वार्षिक सदस्यता शुल्क	–	रु. 100/–
पाक्षिक प्रकाशन सहयोग	–	रु. 2100/–
मासिक प्रकाशन सहयोग	–	रु. 5100/–
षाण्मासिक प्रकाशन सहयोग	–	रु. 11000/–
वार्षिक प्रकाशन सहयोग	–	रु. 21000/–

प्रकाशक

आर्य प्रतिनिध सभा राजस्थान राजापार्क,

जयपुर – 302004

0141–2621879, 9314032161

e-mail : aryapratinidhisabhrajasthan@gmail.com

मुद्रण : दिनांक 20.07.2023

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः।
अश्रद्धामनृतेऽदधाच्छ्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।।

विषयानुक्रम

– सभा आपके द्वारे 04

– शिवलिंग है या ज्योतिर्लिंग! 08

– जयपुर प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन 11

– बरेली में आर्यसमाज का उद्भव 12

– समाचार – वीथिका 14

आर्य मार्तण्ड पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी प्रतिवाद हेतु न्याय क्षेत्र जयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

दि राजस्थान स्टेट को–ऑपरेटिव बैंक लि.
खाता धारक का नामः–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर
खाता संख्या :– **10008101110072004**
IFSC Code :- RSCB0000008
सभा को दिया गया दान आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है।
AAHAA5823D/08/2020-21/S-008/80G

प्रकाशक एवं मुद्रक श्री जीव वर्धन शास्त्री ने स्वामी आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजापार्क जयपुर की ओर से वी.के. प्रिन्टर्स सुदर्शनपुरा जयपुर से आर्य मार्तण्ड पत्रिका मुद्रित कराई और आर्य प्रतिनिधि सभा राजापार्क जयुपर से प्रकाशित सम्पादक– **श्री जीव वर्धन शास्त्री–मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा**

सभा आपके द्वारे

पीले चावल लेकर आ रहे हैं हम

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का प्रान्तव्यापी दौरा 24 जुलाई से

— डॉ. मोक्षराज

हम सभी के प्यारे ऋषि की 200वीं जन्मजयन्ती के अवसर पर आयोजित प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए 24 जुलाई, 2023 से प्रान्त व्यापी आर्य सम्पर्क यात्रा चलाई जाएगी। 'सभा आपके द्वारे' थीम पर चलने वाली इस यात्रा का प्रमुख उद्देश्य है : जन–जन को आर्य महासम्मेलन में आमन्त्रित करना। सभा के पदाधिकारी एवं प्रमुख कार्यकर्त्ता आपके नगर–गाँव में आकर पीले–चावल बाँटेंगे।

यात्रा की व्यापकता को ध्यान में रखते हुए पहले से प्रचलित 7 सम्भागों के लिए सभा के मन्त्री जीववर्धन शास्त्री के नेतृत्व में चार सम्भाग जयपुर, भरतपुर, कोटा एवं उदयपुर, सभा के कोषाध्यक्ष श्री जयसिंह गहलोत के नेतृत्व में बीकानेर एवं जोधपुर सम्भाग, वेद प्रचार अधिष्ठाता डॉ. मोक्षराज के नेतृत्व में अजमेर सम्भाग का प्रवास किया जाना है। इन सम्भागों के उप–प्रधान श्री अशोक आर्य (अजमेर), श्री नरदेव आर्य (उदयपुर) श्री सेवाराम आर्य (जोधपुर) श्री सत्यदेव आर्य (भरतपुर), श्री रमेश गोस्वामी (कोटा), श्री शिवकुमार कौशिक (जयपुर) एवं श्री आनन्द मोहन आर्य (बीकानेर) से सभा ने सम्पर्क किया है। प्रत्येक सम्भाग से 10.10 प्रमुख कार्यकर्त्ता एवं पदाधिकारी भी इस यात्रा में विशेष सहयोग प्रदान करेंगे।

जयपुर सम्भाग में — 24 एवं 27 जुलाई
जोधपुर सम्भाग में — 28, 29 व 30 जुलाई
अजमेर सम्भाग में — 29–30 जुलाई
उदयपुर सम्भाग में — 31 जुलाई, 1–2 अगस्त
बीकानेर सम्भाग में — 01–03 अगस्त
कोटा सम्भाग में — 03–04 अगस्त
भरतपुर सम्भाग में — 05–06 अगस्त

आप सभी से विनीत प्रार्थना है, कृपया प्रवास पर निकली टोलियों का उत्साह बढाएँ तथा जो कार्यकर्त्ता सेवा देना चाहें, वे अपने–अपने सम्भाग के उप–प्रधान अथवा मन्त्री– जीववर्धन जी को नाम लिखवा दें।

इस आर्य–सम्पर्क यात्रा के बाद जयपुर में

दिनांक 9–13 अगस्त तक
योग–स्वाध्याय–सेवा शिविर

का आयोजन किया जा रहा है, इस शिविर में प्रान्तभर से सैकड़ों साधक/कार्यकर्त्ता उपस्थित हो रहे हैं इस शिविर में–

दिनांक 11–12 अगस्त को
यज्ञ प्रशिक्षण

भी दिया जायेगा, जिसमें आप 11 अगस्त से भी हिस्सा ले सकेंगे। तदुपरान्त

दिनांक 12–13 अगस्त को
कार्यकर्ता–कार्यशाला

भी जयपुर में ही जय की गई है।

आप सभी को एक सूचना और देनी थी– विगत अंक में 'भव्य होगा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन' शीर्षक से एक अपील भेजी थी, जिसमें

— 200 कन्याओं के यज्ञोपवीत
— 200 बालकों के यज्ञोपवीत

— 200 नित्य अग्निहोत्र दीक्षा

— 200 आर्य प्रचारकों की दीक्षा

— 200 कुण्डीय हवन हेतु पंजीयन के लिए आग्रह किया था। जिसके क्रम में आपसे प्रार्थना है कि यदि आप किसी भी प्रकार के पंजीयन अथवा महासम्मेलन के लिए दान भेजना चाहें तो कृपया निम्न खाता संख्या में भेजें —

दि राजस्थान स्टेट को—ऑपरेटिव बैंक लि. जयपुर

खाताधारक का नामः—

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर

खाता संख्या :— 10008101110072004

IFSC Code :- RSCB0000008

सभा को दिया गया दान आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है।

बैंक ऑफ बडौदा

खाता धारक का नामः—महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास

खाता संख्या :— 01360100028646

IFSC Code :- BARB0XTUNIJ

सभा को दिया गया दान आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है।

इस 'महासम्मेलन' में लगभग 2.50 करोड रुपये का व्यय होना सम्भावित है, अतः आप अथवा आपके निकटस्थ समृद्ध महाशय यज्ञ, भोजन एवं आतिथ्य के देव पूजन कार्य में अपनी पवित्र आय का दान करें—करावें।

जिन महानुभावों ने विभिन्न रचनात्मक आयोजनों को विस्तार से नहीं जाना है, कृपया वे आर्य मार्तण्ड, जुलाई—प्रथम अंक अवश्य पढ़ें एवं हो सके तो आर्य महासम्मेलन से सम्बन्धित आलेख की प्रतिलिपि कर इष्टमित्रों में वितरित करावें।

ओ३म् स्वस्ति पंचामनुचरेम।

प्रचार एवं मीडिया महासम्मेलन—8696429696

सांध्य दिव्य राष्ट्र | देश—प्रदेश | जयपुर मंगलवार 11 जुलाई, 2023 | 3

जयपुर में होगा प्रांतीय आर्य महासम्मेलन : देश विदेश से 25 हजार आर्य होंगे शामिल

जयपुर । आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एवं महर्षि दयानंद स्मृति भवन न्यास जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में 23-24 सितंबर 2023 को विशाल आर्य महासम्मेलन आयोजित किया जाएगा. जिसके बारे में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रवक्ता एवं मीडिया प्रभारी डॉ. मोक्षराज ने बताया कि राजस्थान विश्वविद्यालय के कॉलेज ग्राउंड, जेएलएन मार्ग, जयपुर में भाद्रपद अष्टमी एवं नवमी सम्वत् 2080 शनिवार व रविवार को आयोजित इस महासम्मेलन में आर्य जगत् के जाने माने शीर्षस्थ धार्मिक विद्वान् एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं सहित लगभग 25,000 आर्यजन उपस्थित होंगे ।

विदेश से भी -

इस समारोह में अमेरिका, मॉरिशस, सूरीनाम, फीजी, ऑस्ट्रेलिया, गयाना, दक्षिणी अफ्रीका आदि से भी अनेक आर्य विद्वान व नेता पधारेंगे ।

बेटियों के भी होंगे जनेऊ संस्कार-

सम्मेलन को ऐतिहासिक रूप देने के लिए 200 बालिकाओं तथा 200 बालकों को यज्ञोपवीत प्रदान किए जाएंगे । आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ने नर-नारी ब्राह्मण-शूद्र सभी मानवमात्र को वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया था । इसलिए आर्यसमाजों की प्रान्त स्तरीय प्रतिनिधि संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान सभी कुल-वंशों के बालक बालिकाओं का यज्ञोपवीत संस्कार कराएगी।

वनवासियों व पिछड़ों का होगा सत्कार-

डॉ. मोक्षराज ने बताया कि आर्यसमाज आरंभ से ही छुआछूत और भेदभाव का विरोधी रहा है । अतः जड़ी बूटी व जंगलों की रक्षा करने वाले वनवासियों तथा समाज की मुख्यधारा से वंचित लोगों का इस सम्मेलन में न केवल सत्कार होगा । बल्कि उन्हें शिक्षा व रोजगार के लिए सहयोग भी प्रदान किया जाएगा।

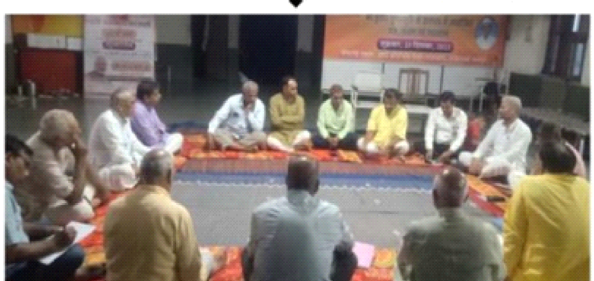

200 नए समाजसेवी होंगें दीक्षित -

नौकरी एवं व्यवसाय से सेवानिवृत्त हुए स्वस्थ एवं निर्व्यसनी दो सौ वरिष्ठ नागरिकों को आर्य प्रचारक दीक्षा प्रदान की जाएगी । जो प्रदेश में ज्ञान की ज्योति जलाएंगे तथा समाजसेवा के कार्यों में लगेंगे।

200 कुंडीय हवन में 01 लाख आहुतियां देंगे-

महर्षि दयानंद सरस्वती ने हवन की विधि को सर्वसाधारण के लिए सरल व सुलभ कर दिया था । आर्य समाज की वैदिक यज्ञ विधि को ही गायत्री परिवार के संस्थापक श्रीराम आचार्य एवं पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के संस्थापक स्वामी रामदेव ने अपनाया है । अतः आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती के जन्म की दूसरी शताब्दी के अवसर पर 200 कुंडों पर 1600 यजमानों का पंजीयन किया जा रहा है, जो एक लाख आहुतियां प्रदान करेंगे ।

भारत के प्रधानमंत्री ने किया था शुभारंभ-

उल्लेखनीय है कि आर्यसमाज एवं संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार एवं पूरा भारत महर्षि दयानंद सरस्वती महाराज के 200वें जयन्ती समारोह को दो वर्ष तक मना रहा है, जिसके क्रम में 12 फरवरी को इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम दिल्ली में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाखों लोगों की उपस्थिति में एक लोगो जारी कर दो वर्ष तक चलने वाले कार्यक्रमों का शुभारंभ किया था तथा केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर तालकटोरा स्टेडियम में आर्यसमाज के योगदान पर उद्बोधन प्रदान किया ।

डाक टिकट हुआ था जारी-

महर्षि दयानंद सरस्वती के 200वें जयंती वर्ष को ऐतिहासिक रूप प्रदान करने के लिए सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय तथा भारत के उप राष्ट्रपति महामहिम जगदीप धनकड़ ने डाक टिकट जारी किया । डॉ. मोक्षराज बताते हैं कि आयोजनों की इसी शृंखला में राजस्थान की समस्त आर्यसमाजों की प्रतिनिधि संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा यह आयोजन कर रही है । इस महासम्मेलन में राजस्थान सहित कई प्रांतों के राज्यपाल एवं मुख्यमंत्रियों के पधारने की सम्भावना है । जिसके लिए सभा प्रधान किशनलाल गहलोत तथा मंत्री जीव वर्धन शास्त्री ने न्यौता देना आरम्भ कर दिया है ।

जयपुर की प्रमुख आर्यसमाजों ने कमर कसी-

कार्यक्रम को भव्य एवं सफल बनाने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के राजापार्क स्थित कार्यालय में जयपुर की स्थानीय आर्यसमाजों की बैठक हुई । इस बैठक में सभा प्रधान किशन लाल गहलोत, मंत्री जीव वर्धन शास्त्री, कोषाध्यक्ष जयसिंह गहलोत, नरदेव आर्य, प्रोफेसर संदीपन आर्य, रवि चड्ढा, गोवर्धन चौधरी, आर्यसमाज मानसरोवर से सुनिल अरोड़ा, आर्यसमाज [redacted] से चंद्रशेखर शर्मा, आर्यसमाज मोती कटला से अशोक कुमार शर्मा, आर्यसमाज कोठी कॉलिनान से राजेंद्र आर्य, आर्य समाज नींदड़ से पंडित भगवान सहाय, आर्यसमाज बगरू से डॉ. सुधीर शर्मा, आर्यसमाज आदर्श नगर राजापार्क से रवि नैयर, देवेंद्र त्यागी, आर्यसमाज सांगानेर तथा आर्यसमाज जनता कॉलोनी से शशांक खण्डेलवाल आदि से प्रमुख पदाधिकारियों ने भाग लिया ।

वेद वैज्ञानिक आचार्य अग्निव्रत ने किया पोस्टर का विमोचन

जयपुर में होगा प्रांतीय आर्य महासम्मेलन

खबरों की दुनिया

जयपुर। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान पुनर्जागरण के पुरोधा, महान समाज सुधारक महर्षि दयानंद सरस्वती के जन्म की द्वितीय शताब्दी को समारोह पूर्वक मना रहा है । जिसके क्रम में राजस्थान विश्वविद्यालय के राजस्थान महाविद्यालय स्थित खेल मैदान में 23-24 सितंबर 2023 को विशाल आर्य महासम्मेलन होगा। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रवक्ता एवं मीडिया प्रभारी डॉ. मोक्षराज ने बताया कि गुरुवार को वैदिक स्वस्ति पंथा न्यास, वेद विज्ञान मंदिर, भीनमाल के अध्यक्ष आचार्य अग्निव्रत ने राजापार्क स्थित आर्य प्रतिनिधि सभा भवन में एक आमंत्रण-पोस्टर का विमोचन किया। बिग बैंग व ब्लैक होल थ्योरी से प्रसिद्ध हुए स्टीफ़न हॉकिंस के अनेक सिद्धांतों को तार्किक चुनौती देने वाले आर्य जगत् के उद्भट विद्वान् एवं ऐतरेय ब्राह्मण के वैज्ञानिक भाष्यकार आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक ने विमोचन कार्यक्रम के अवसर पर कहा कि हमें वेदों के विज्ञान को विश्व में पुनः स्थापित करना होगा।

विमोचन कार्यक्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान किशन लाल गहलोत , मंत्री जीव वर्धन शास्त्री, उपप्रधान नरदेव आर्य, विशाल आर्य, आदि उपस्थित थे। डॉ. मोक्षराज ने बताया कि इस समारोह में अमेरिका, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया, फ़िजी, अफ़्रीका, मॉरिशस, सूरीनाम, गयाना, नेपाल, भूटान, म्यांमार, सिंगापुर एवं बांग्लादेश से अनेक विद्वान तथा आर्यनेता उपस्थित होंगे तथा इस सम्मेलन में 200-200 बालक बालिकाओं के यज्ञोपवीत संस्कार, 200 हवन कुंडों में एक लाख आहुतियाँ, नित्य हवन करने वालों का सम्मान तथा पिछड़ों का सत्कार आदि विशेष आकर्षण हैं ।

बेहतर शिक्षा प्राप्त हो सके ।

अध्यक्षगण प्रमुख रूप से उपस्थित रहेंगे।

लोकमत पेज 7

जयपुर में होगा प्रांतीय आर्य महासम्मेलन, देश विदेश से 25 हज़ार आर्य होंगे शामिल

जयपुर/लोकमत। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एवं महर्षि दयानंद स्मृति भवन न्यास जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में 23-24 सितंबर 2023 को विशाल आर्य महासम्मेलन आयोजित किया जाएगा. जिसके बारे में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रवक्ता एवं मीडिया प्रभारी डॉ. मोक्षराज ने बताया कि राजस्थान विश्वविद्यालय के कॉलेज ग्राउंड, जेएलएन मार्ग, जयपुर में भाद्रपद अष्टमी एवं नवमी सम्वत् 2080 शनिवार व रविवार को आयोजित इस महासम्मेलन में आर्य जगत् के जाने माने शीर्षस्थ धार्मिक विद्वान् एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं सहित लगभग 25,000 आर्यजन उपस्थित होंगे । इस समारोह में अमेरिका, मॉरीशस, सूरीनाम, फजिी, ऑस्ट्रेलिया, गयाना, दक्षिणी अफ्रीका आदि से भी अनेक आर्य विद्वान व नेता पधारेंगे ।

बेटियों के भी होंगे जनेऊ संस्कार : सम्मेलन को एतिहासिक रूप देने के लिए 200 बालिकाओं तथा 200 बालकों को यज्ञोपवीत प्रदान किए जाएँगे । आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ने नर-नारी ब्राह्मण-शूद्र सभी मानवमात्र को वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया था । इसलिए आर्यसमाजों की प्रान्त स्तरीय प्रतिनिधि संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान सभी कुल-वंशों के बालक बालिकाओं का यज्ञोपवीत संस्कार कराएगी।

वनवासियों व पिछड़ों का होगा सत्कार : डॉ. मोक्षराज ने बताया कि आर्यसमाज आरंभ से ही छुआछूत और भेदभाव का विरोधी रहा है । अत: जड़ी बूटी व जंगलों की रक्षा करने वाले वनवासियों तथा समाज की मुख्यधारा से वंचित लोगों का इस सम्मेलन में न केवल सत्कार होगा । बल्कि उन्हें शिक्षा व रोज़गार के लिए सहयोग भी प्रदान किया जाएगा।

200 नए समाजसेवी होंगें दीक्षित : नौकरी एवं व्यवसाय से सेवानिवृत्त हुए स्वस्थ एवं निर्व्यसनी दो सौ वरिष्ठ नागरिकों को आर्य प्रचारक दीक्षा प्रदान की जाएगी । जो प्रदेश में ज्ञान की ज्योति जलाएँगे तथा समाजसेवा के कार्यों में लगेंगे।

200 कुंडीय हवन में 01 लाख आहुतियाँ देंगे : महर्षि दयानंद सरस्वती ने हवन की विधि को सर्वसाधारण के लिए सरल व सुलभ कर दिया था । आर्य समाज की वैदिक यज्ञ विधि को ही गायत्री परिवार के संस्थापक श्रीराम आचार्य एवं पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के संस्थापक स्वामी रामदेव ने अपनाया है ।

< Back nirala samaj-13-7-23.pdf

जयपुर में होगा प्रांतीय आर्य महासम्मेलन

देश विदेश से 25 हजार आर्य होंगे शामिल

निराला समाज, जयपुर। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एवं महर्षि दयानंद स्मृति भवन न्यास जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में 23-24 सितंबर 2023 को विशाल आर्य महासम्मेलन आयोजित किया जाएगा. जिसके बारे में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रवक्ता एवं मीडिया प्रभारी डॉ. मोक्षराज ने बताया कि राजस्थान विश्वविद्यालय के कॉलेज ग्राउंड, जेएलएन मार्ग, जयपुर में भाद्रपद अष्टमी एवं नवमी सम्वत् 2080 शनिवार व रविवार को आयोजित इस महासम्मेलन में आर्य जगत् के जाने माने शीर्षस्थ धार्मिक विद्वान् एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं सहित लगभग 25,000 आर्यजन उपस्थित होंगे ।

विदेश से भी -इस समारोह में अमेरिका, मॉरीशस, सूरीनाम, फ़िजी, ऑस्ट्रेलिया, गयाना, दक्षिणी अफ्रीका आदि से भी अनेक आर्य विद्वान व नेता पधारेंगे ।

बेटियों के भी होंगे जनेऊ संस्कार

सम्मेलन को एतिहासिक रूप देने के लिए 200 बालिकाओं तथा 200 बालकों को यज्ञोपवीत प्रदान किए जाएँगे । आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ने नर-नारी ब्राह्मण-शूद्र सभी मानवमात्र को वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया था । इसलिए आर्यसमाजों की प्रान्त स्तरीय प्रतिनिधि संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान सभी कुल-वंशों के बालक बालिकाओं का यज्ञोपवीत संस्कार कराएगी।

वनवासियों व पिछड़ों का होगा सत्कार

डॉ. मोक्षराज ने बताया कि आर्यसमाज आरंभ से ही छुआछूत और भेदभाव का विरोधी रहा है । अतः जड़ी बूटी व जंगलों की रक्षा करने वाले वनवासियों तथा समाज की मुख्यधारा से वंचित लोगों का इस सम्मेलन में न केवल सत्कार होगा । बल्कि उन्हें शिक्षा व रोजगार के लिए सहयोग भी प्रदान किया जाएगा।

200 नए समाजसेवी होंगे दीक्षित

नौकरी एवं व्यवसाय से सेवानिवृत्त हुए स्वस्थ एवं निर्व्यसनी दो सौ वरिष्ठ नागरिकों को आर्य प्रचारक दीक्षा प्रदान की जाएगी । जो प्रदेश में ज्ञान की ज्योति जलाएँगे तथा समाजसेवा के कार्यों में लगेंगे।

200 कुंडीय हवन में 01 लाख आहुतियाँ देंगे

महर्षि दयानंद सरस्वती ने हवन की विधि को सर्वसाधारण के लिए सरल व सुलभ कर दिया था । आर्य समाज की वैदिक यज्ञ विधि को ही गायत्री परिवार के संस्थापक श्रीराम आचार्य एवं पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के संस्थापक स्वामी रामदेव ने अपनाया है । अतः आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती के जन्म की दूसरी शताब्दी के अवसर पर 200 कुंडों पर 1600 यजमानों का पंजीयन किया जा रहा है, जो एक लाख आहूतियाँ प्रदान करेंगे ।

भारत के प्रधानमंत्री ने किया था शुभारंभ

उल्लेखनीय है कि आर्यसमाज एवं संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार एवं पूरा भारत महर्षि दयानंद सरस्वती महाराज के 200वें जयन्ती समारोह को दो वर्ष तक मना रहा है, जिसके क्रम में 12 फरवरी को इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम दिल्ली में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाखों लोगों की उपस्थिति में एक लोगो जारी कर दो वर्ष तक चलने वाले कार्यक्रमों का शुभारंभ किया था तथा केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर तालकटोरा स्टेडियम में आर्यसमाज के योगदान पर उद्बोधन प्रदान किया ।

डाक टिकट हुआ था जारी

महर्षि दयानंद सरस्वती के 200वें जयंती वर्ष को ऐतिहासिक रूप प्रदान करने के लिए सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय तथा भारत के उप राष्ट्रपति महामहिम जगदीप धनकड ने डाक टिकट जारी किया । डॉ. मोक्षराज बताते हैं कि आयोजनों की इसी शृंखला में राजस्थान की समस्त आर्यसमाजों की प्रतिनिधि संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा यह आयोजन कर रही है । इस महासम्मेलन में राजस्थान सहित कई प्रांतों के राज्यपाल एवं मुख्यमंत्रियों के पधारने की सम्भावना है । जिसके लिए सभा प्रधान किशनलाल गहलोत तथा मंत्री जीव वर्धन शास्त्री ने न्यौता देना आरम्भ कर दिया है ।

जयपुर की प्रमुख आर्यसमाजों ने कमर कसी

कार्यक्रम को भव्य एवं सफल बनाने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के राजापार्क स्थित कार्यालय में जयपुर की स्थानीय आर्यसमाजों की बैठक हुई । इस बैठक में सभा प्रधान किशन लाल गहलोत, मंत्री जीव वर्धन शास्त्री, कोषाध्यक्ष जयसिंह गहलोत, नरदेव आर्य, प्रोफ़ेसर संदीपन आर्य, रवि चड्ढा, गोवर्धन चौधरी, आर्यसमाज मानसरोवर से सुनिल अरोड़ा, आर्यसमाज किशनपोल से चंद्रशेखर शर्मा, आर्यसमाज मोती कटला से अशोक कुमार शर्मा, आर्यसमाज कोठी कोलियान से राजेंद्र आर्य, आर्य समाज नींदड से पंडित भगवान सहाय, आर्यसमाज बगरू से डॉ. सुधीर शर्मा, आर्यसमाज आदर्श नगर राजापार्क से रवि नैयर, देवेंद्र त्यागी, आर्यसमाज सांगानेर तथा आर्यसमाज जनता कॉलोनी से शशांक छतवाल आदि से प्रमुख पदाधिकारियों ने भाग लिया।

-: सावधान रहिए :-

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान से सम्बद्ध/पंजीकृत समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि कुछ अनधिकृत लोग स्वयं को आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का पदाधिकारी बताकर आर्य सामाजों से दशांश एवं वार्षिक चित्र एकत्रित करने हेतु प्रदेशभर में घूम रहे हैं। पूर्व में भी ये लोग आर्यसमाजों से वेद प्रचार वाहन के नाम से चन्दा एकत्रित कर स्वयं के नाम से वाहन खरीद कर संस्थाओं के धन का दुरुपयोग कर चुके हैं।

यदि कहीं ये आपको भी मिलें तो इनसे यह भी पूछ सकते हैं कि इनके कोषाध्यक्ष कौन हैं? जिन्हें ये उगाई गई धनराशि जमा करवा रहे है। अतः आप इस सम्बन्ध में सावधान रहें।

आप से आग्रह है कि किसी भी अनधिकृत व्यक्ति को अपने आर्यसमाज का मानत्रित व दशांश व्यक्तिशः रूप से न दें, अपितु सभा के **'पंजीकृत कार्यालय-आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजापार्क, जयपुर-302004'** के पते पर ही प्रेषित करें।

अधिक जानकारी व शिकायत के लिये सभा कार्यालय के दूरभाष सं. 0141-2621879 एवं मो. 8209387906 पर सम्पर्क करें।

- जीववर्धन शास्त्री - मंत्री

शिवलिंग है या ज्योतिर्लिंग!

स्व० श्री पं० बुद्धदेव विद्यालंकार
(स्वामी समर्पणानन्द जी)

मिस मेयो ने 'मदर इण्डिया' नाम की पुस्तक लिखी जिसमें हिन्दुओं की तथा भारत की यह कहकर खिल्ली उड़ाई है, 'यह जाति तथा देश अपने आपको किस प्रकार सभ्य कहते, जिसके नगर में शिवलिंग की अश्लील मूर्ति बनी हुई है। इस अपमानजनक आक्षेप को शिव पुराण की दारूबन की कथा से पुष्टि भी मिलती है।

किन्तु हमारा कथन है कि दारूबन की कथा पुराण में आये हुए ज्योतिर्लिंग शब्द से मेल नहीं खाती। या तो ज्योतिलिंग शब्द ठीक नहीं, अथवा दारूबन की कथा कपोल कल्पित है? अब देखना चाहिये कि इसमें से कौन असली है कौन सी प्रक्षिप्त है। हमारी सम्मति में दारूबन की अश्लील कथा कल्पित है। दारूबन कथा अत्यन्त भद्दी है। यदि उसको यहाँ दिये बिना काम न चल सकता तो। हम उसे विस्तारपूर्वक यहाँ देते परन्तु हम जो कुछ यहाँ दिखाना चाहते हैं उसके लिये इतना ही कहना पर्याप्त है। कथा के अनुसार शिवलिंग की मूर्ति में स्त्री तथा पुरुष के गुप्त अंगों का सम्मिश्रण है।

अब इसमें निम्नलिखित बातें विचारणीय हैं। सबसे प्रथम तो यही देखना है कि क्या इन दोनों अंगों का सम्मिश्रण कभी इस प्रकार सम्भव है। यदि आप ध्यान से विचारें तो यह एक असम्भव बात है। इन दोनों अंगों के सम्मिश्रण में पुरुषांग का अग्र भाग ऊपर की ओर खड़ा हुआ दिखाना किसी कल्पना के क्षेत्र में भी संभव नहीं।

हाँ दूसरी ओर यदि हम इसे दीपक मानलें तो यह चित्र बिल्कुल ठीक समझ में आ जाता है। इसमें एक प्रश्न यह उठता है दीपक में तो ज्वाला किनारे की ओर चोंच में होती है परन्तु यह गृहदीप की बात है। मंदिर में जो मंगल दीप जलाया जाता है उसकी ज्वाला किनारों पर न होकर बिल्कुल बीच में होती है। यह बात गीता में कहीं भी गई है।

यथा दीपो निवातस्थो नेगते सोपमा स्मृता।
योगिनो यत् चित्तस्य युजेतो योगमात्मनः।।

भावार्थ – योगी जब चित्त को समाधिस्थ करना चाहे तो अपने सामने दीपक की उपमा बनाकर रखे। उपमा है भी बड़ी सुन्दर दीपक के शरीर में तेल अथवा घी भरा जाता है। दीपक की ज्वाला तेल को खेचकर ऊपर उठाती है। हमारे शरीर में वीर्य भरा है। शिव संकल्प की ज्वाला वीर्य को पतन से बचाकर ऊपर उठाती है। मनुष्य को ऊर्ध्वरेता बनाती है। मन में शिव संकल्प की ज्वाला काम–क्रोधादि की आंधी से बुझ जाती है। प्राणायाम से आन्तरिक ज्वाला स्थिर हो जाती है। इसलिए कहा स्थाय दीपक की ज्वाला चंचल है। आंधी के वेग से बुझ जाती है। वायु के वेग से बचाने से ज्वाला सुरक्षित हो जाती है। इसलिये कहा : नेगते (न इगते)। अब प्रश्न है कि आकृति (महाउद्देश्य) के लिये प्रबल वेग से प्रेरणा करने वाले शिवसंकल्प के लिये आहुति हो। अब प्राचीन मर्यादा के अनुसार हर ब्रह्मचारी को ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा वैश्य एक न एक कर्म के पालन का व्रत शिक्षारम्भ से लेना पड़ता था। वह तीनों में से एक को चुनता था। इसलिये यह उसका वर्ण कहलाता था। और इसीलिये ब्रह्मचारी को वृति अथवा वर्णी कहते थे। वर्ण नाम वेद का भी है। वर्ण वेद का अध्ययन करने से ब्रह्मचारी को वर्णी कहते हैं।

देखो एवं **बाज सेनयाना मागिरसानां वर्णान**

सोअहं कोशिक पक्षः शिष्यः। यज्ञ परिशिष्ट ३/५/१ स. इसी शिव संकल्प को शिवलिंग अथवा अग्नि ज्वाला अथवा ज्योतिलिंग कहते हैं। 'इसका सबसे अधिक स्पष्ट प्रमाण शतपथ ब्राह्मण में इस प्रकार आया है—

अग्निर्वेश देवस्त स्तयेतानि नामानि शर्व इति यथा प्राच्या चक्षेत, भव इति वाहीकाः पशु नाम्पति रूदीग्निरिति तान्य शान्ता न्येवेतराणि नामानि अगिनत्यिव शान्ततमम।।

शतपथ — १, ७, ३, ८

यह अग्निदेव है। उसके हो ये नाम हैं। जैसे पूर्व लोग उसे शर्व कहते हैं। वाहिक देश (पंजाब) के लोग उसे भवः कहते हैं। तथा अन्य लोग पशुनाम पति स्ट्र अग्नि आदि नामों से पुकारते हैं। इनमें से अग्नि यह नाम शान्तमय है, अन्य नाम अशान्त है।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो गया कि मानव शरीर को दीपक मानकर उसमें जलने वाली शिवसंकल्प की ज्वाला ही शिवलिंग अथवा ज्योतिर्लिंग है। इस शरीर में वीर्य ही शक्ति है। जिसमें हाथ, पैर आंख, कान आदि सब देवों ने अपना अंशदान किया है और इसलिये उसके एक बिन्दु से सम्पूर्ण शरीर फिर तैयार हो जाता है।

अब मनुष्य के जीवन में जो स्थान शिवसंकल्प का है वही स्थान सेना में सेनापति का है। तथा मानव शरीर में जो स्थान वीर्य का है। वही राष्ट्र में सेना का है। इसी सेनापति को वेद में रुद्र कहा गया है, यजर्वेद १६ अध्याय १७ वें मंत्र में रुद्र के लिये 'सेनाये' विशेषण आया है। फिर २६ वें मंत्र में सेनानिम्यश्चयो नमः कहा है। इसी प्रकार ऋग्वेद में मरुतो अर्थात् सैनिकों को रुद्राः तथा रुद्रस्य मर्ययाः कहा है।

अब यदि रुद्र सेनापति है तो सेना उसकी पत्नि है। अब इस अलंकार को समझकर रुद्र का पुराणों में वर्णन है। उसे ठीक समझ लीजिये। रुद्र सेनापति उसके माथे पर चन्द्रमा है। चन्द्रमा नाम वैदिक साहित्य में बालक का है। सो सेनापति जब शत्रु के देश में आक्रमण करता है तो बालकों को तथा तदुपलक्षित दुर्बलों को सिर पर धारण करता है। उन्हें कुछ नहीं कहता है। बालकों से अत्यन्त स्नेह करना यही वीर का स्वभाव है। सेनापति के मस्तक में शत्र को परास्त करने का जो संकल्प है वही उसका तीसरा नेत्र है। किन्तु वह मुदित रहता है। जब वह खुलता है तो प्रलय आ जाती है।

रुद्र के मस्तक पर पापनाशिनी गंगा है जो विष्णु के पैरों में निकलती है, विष्णु नाम राष्ट्र अथवा संगठन का है। राष्ट्र अपनी रक्षा के लिये जो आज्ञा देता है वही गंगा है यह राष्ट्र के चरणों से निकलती है किन्तु सेनापति उसे शिरोधार्य करता है।

यह राष्ट्र रक्षा की आज्ञा ही ऐसी गंगा है जिसके कारण युद्ध में होने वाले सहस्रों पाप नहीं रहते। इसलिये इसे पापनाशिनी कहते हैं। संस्कृत में गुप्तचरों को अपसर्प कहते हैं। यह सर्प चारो ओर सर्पण करके समाचार लाते हैं, शत्रु के राज्य में विष फैलाते हैं किन्तु इस्ट को नहीं डसते उसके गले का हार हैं। जितने भयंकर शत्रुओं को सेनापति ने मारा उनकी मुण्ड माला ही रुद्र का भूषण है। शमशान में उसका वास है क्योंकि वह जहाँ जाता है बड़े—बड़े नगर क्षण भर में शमशान बन जाते हैं और इसी पर हत्या के मैदान में वह ताण्डव नृत्य करता है।

रुद्र के कण्ठ से जब आज्ञा निकलती है, तब मारो, काटो इस प्रकार की पैनी आज्ञाएँ ही निकलती हैं इसलिये वह शितिकण्ड हो कहलाती है। इन कठोर आज्ञाओं का विष उसके कण्ठ तक ही रहता है, हृदय तक नहीं पहुँचता। हृदय तो

उसका वात्सल्य तथा दीन बन्धुत्व की भावना से भरा हुआ है इसलिये दुष्टों पर ही उसे क्रोध आता है। इसलिये यजुर्वेद १६ के मंत्र में सबसे प्रथम मृत्यु को नमस्कार किया है।

उसने जो वचन एक बार कह दिया वह पक्का है। हर एक मनुष्य उस वचन के भरोसे सुख की नींद सोता है और वह भी अपने श्वचन पर स्थिर रूप से शयन करता है। इसलिये उसे गिरीश कहते हैं ।

पार्वती उसकी पत्नी है। पर्वत नाम उस स्थान का है जहाँ सेनाएँ रहती है क्योंकि वह अंगुलियों के समान एक सी आकृति वाले एक पंक्ति में होते हैं। इन पर्वतों की वह पुत्री है सेना भी अपने वाणी की पक्की है इसलिये वह गिरिजा है। रुद्र की आज्ञा को पतिव्रता पत्नी की तरह मानती है उसे जितना सुगम नहीं है इसलिये वह दुर्गा है, वीर इसके सिंह पर वह सवार है, इसलिये वह सिंहवाहिनी है। सब विभाग अपना—अपना अंश और सब देव अपना—अपना शस्त्र उसे देते हैं। इसलिये वह सब देवों के अंश के मेल से उत्पन्न है और सर्वार्द्धवर्ता है।

उसके माथे पर जो तृतीय नेत्र में शिव संकल्प रूप अग्नि है वही शिवलिंग अथवा ज्योतिर्लिंग है। इस प्रकार हमने देख लिया कि शिव क्या है और शिवलिंग क्या है।

अब आप सोचिये कि जब पाश्चात्य इतिहासकारों का मूलाधार ही नष्ट हो गया है तो फिर प्राचीन आर्यों को जंगली बताना तथा शिव को द्रविड़ों का देवता बताना आदि ऊटपटांग प्रमल प्रलापों का क्या मूल्य हो सकता है ! ऋग्वेद में वचन आया है।

मा शिश्नदेवा अपिगुऋतं नः।

अर्थात् — हमारे यज्ञों में शिश्नदेव लोग कभी न आवें जो भोग विलास के उपासक हैं। इस शिश्नदेव शब्द का अर्थ सायणादि सब भाष्यकारों ने भोगविलास में लिप्त कामातुर मनुष्य किया है किन्तु इन पाश्चात्य विद्याशत्रुओं ने इस शिश्नदेव को शिवलिंग से मिलाकर जो अनर्थ किया है, उस पर क्या कहा जाये। जिस दिन से इस देश से विदेशी विचारों की दासता का बन्धन टूटेगा तो इन भ्रष्ट ग्रन्थों की सब मिलाकर होली करेंगे। देखें वह शुभ दिन कब आता है।

उपरोक्त दर्द भरे भाव दर्शन वाले आर्य जगत के तेजस्वी मेधावी महान् पुरुष पंडित बुद्धदेवजी विद्यालंकार (स्वामी समर्पणानंद सरस्वती) स्वर्ग धाम सिधार गये और देश स्वतंत्र हो चालीस वर्ष हो गये लेकिन पौराणिक विचाराधारा में बहे हिन्दू समाज ही क्या सरदार पटेल सरीखे राजनेता भी शिवलिंग के रूप में शिश्नदेव के शिव मंदिर का जीर्णोद्धार कर आये। आये दिन नये—नये शिवालयों की स्थापना कब रुकेगी। काश हमारे पौराणिक विद्वानों एवं स्वयंभू जगद्गुरू शंकराचार्य बने आचार्यों को भगवान सद्बुद्धि दे भारत के सम्पूर्ण शिवमंदिरों में शिवलिंग प्रतिमा को हटाकर वास्तविक योगीराज महात्मा शिवजी की मूर्ति स्थापित कर दे तो महान कार्य होगा और शिव पुराण की दारूबन की अश्लील भद्दी कथा को भी प्रक्षिप्त जान हटा दे जिसने महात्मा शिवजी को नग्न रूप में कामातुर बताकर ताण्डवनृत्य करते बताया गया है। यह अत्यन्त अशोभनीय चित्र है। अन्य श्रद्धालु भक्तों को प्रायः यह भी पता नहीं कि शिवलिंग—शिव भगवान का मुख है या अन्य भाग इसलिये अन्य मंदिरों में महापुरूषों की प्रतिमा पहिचानी जाती है कि यह श्रीराम है, कृष्ण है, हनुमान है, इन महापुरुषों का भी चित्र है और चरित्र भी भक्तजनों को बताने का यत्न करना चाहिये।

वेद ही ईश्वरी ज्ञान का भण्डार है— वेद का पढ़ना—पढ़ाना मानवा मात्र का परम धर्म है।

जयपुर में होगा प्रांतीय आर्य महासम्मेलन

23-24 सितंबर को देश-विदेश से 25 हजार आर्यजन होंगे शामिल

जयपुर, 9 जुलाई (ब्यूरो): आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एवं महर्षि दयानंद स्मृति भवन न्यास जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में 23-24 सितंबर को जयपुर में आर्य महासम्मेलन आयोजित किया जाएगा। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रवक्ता एवं मीडिया प्रभारी डॉ. मोक्षराज ने बताया कि राजस्थान विश्वविद्यालय के कॉलेज ग्राउंड, जेएलएन मार्ग, जयपुर में आयोजित इस महासम्मेलन में आर्य जगत के शीर्षस्थ धार्मिक विद्वान् एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं सहित लगभग 25 हजार आर्यजन उपस्थित होंगे।

200 कुंडीय हवन में 01 लाख आहुतियां : महर्षि दयानंद सरस्वती ने हवन की विधि को सर्वसाधारण के लिए सरल व सुलभ कर दिया था। आर्य समाज की वैदिक यज्ञ विधि को ही गायत्री परिवार के संस्थापक श्रीराम आचार्य एवं पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के संस्थापक स्वामी रामदेव ने अपनाया है। ऐसे में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की ओर से महर्षि दयानंद सरस्वती के जन्म की दूसरी शताब्दी के अवसर पर 200 कुंडों पर 1600 यजमानों का पंजीयन किया जा रहा है, जो एक लाख आहूतियां प्रदान करेंगे।

स्थानीय आर्य समाजों की हुई बैठक : कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के राजापार्क स्थित कार्यालय में जयपुर की स्थानीय आर्यसमाजों की बैठक हुई। बैठक में सभा प्रधान किशन लाल गहलोत, मंत्री जीव वर्धन शास्त्री, कोषाध्यक्ष जयसिंह गहलोत, नरदेव आर्य, प्रो. संदीपन आर्य, रवि चड्ढा, गोवर्धन चौधरी, आर्यसमाज मानसरोवर से सुनील अरोड़ा, आर्यसमाज किशनपोल से चंद्रशेखर शर्मा, आर्यसमाज मोती कटला से अशोक कुमार शर्मा, आर्यसमाज कोठी कोलियान से राजेंद्र आर्य, आर्य समाज नींदड से पंडित भगवान सहाय, आर्यसमाज बगरू से डॉ. सुधीर शर्मा, आर्यसमाज आदर्श नगर राजापार्क से रवि नैयर, देवेंद्र त्यागी, आर्यसमाज सांगानेर तथा आर्यसमाज जनता कॉलोनी से शशांक छतवाल ने भाग लिया।

बेटियों के भी होंगे जनेऊ संस्कार

सम्मेलन को ऐतिहासिक रूप देने के लिए 200 बालिकाओं तथा 200 बालकों को यज्ञोपवीत प्रदान किए जाएंगे। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ने नर-नारी ब्राह्मण-शूद्र सभी मानवमात्र को वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया था। प्रान्त स्तरीय प्रतिनिधि संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान सभी कुल-वंशों के बालक-बालिकाओं का यज्ञोपवीत संस्कार कराएगी।

वनवासियों व पिछड़ों का होगा सत्कार

आर्यसमाज शुरू से ही छुआछूत और भेदभाव का विरोधी रहा है। ऐसे में जड़ी बूटी व जंगलों की रक्षा करने वाले वनवासियों तथा समाज की मुख्यधारा से वंचित लोगों का इस सम्मेलन में सत्कार होगा, साथ ही उन्हें शिक्षा व रोजगार के लिए सहयोग भी प्रदान किया जाएगा।

पंजाब केसरी 10.07.23 pg 7

बरेली में आर्यसमाज का उद्भव एवं आर्यविभूतियाँ

–आचार्य (डॉ.) श्वेतकेतु शर्मा

पिछले अंक का शेष भाग......

(4) आचार्य (डॉ.) विशुद्धानन्द मिश्र– आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध प्रकाण्ड विद्वान् थे, मूलतः बदायूँ के रहने वाले थे ,आपकी पत्नी प्रकाण्ड आर्यविदुषी आचार्या निर्मला मिश्रा पार्वती आर्यकन्या इन्टर कॉलेज में प्रधानाचार्य थी, वेदार्थकल्पदद्रुम विशाल ग्रन्थ के रचयिता थे, आपकी पारिवारिक मातृभाषा संस्कृत थी। व्याकरण, दर्शनों व वेदों के अद्भुत विद्वान् थे, सम्पूर्ण देश में वेदों का प्रचार प्रसार किया था।

गुरूकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के कुलपति भी रह चुके थे।

(5)आचार्य रमेश चन्द्र पाठक वाचस्पति– आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान् जिनको अनेकों ग्रन्थ कण्ठस्थ थे, कई विषयों में आचार्य व वाचस्पति की उपाधियों से सुशोभित थे। ऐसे आचार्य रमेशचन्द्र पाठक वाचस्पति मूलतः ग्राम नरदौली जिला एटा के निवासी थी, परन्तु अध्ययन व अध्यापन के कारण अनेकों वर्षों तक इटावा में रहे, वहीं संस्कृत विद्यालय में अध्यापन कार्य किया था, आपकी पत्नी आर्यविदुषी डॉ. शारदा देवी पाठक आर्यकन्या इन्टर कॉलेज इटावा में प्रधानाचार्य थी। पत्नी के निधन के उपरान्त कई वर्षों तक कन्या गुरूकुल सासनी, हाथरस में भी संस्कृत व्याकरण, साहित्य, दर्शन, वेद आदि को अध्यापन का कार्य किया, पुनः बाद में आर्यसमाज बिहारीपुर बरेली में पुरोहित के पद पर वर्षो कार्य किया, यहीं से वेदों पर व्याख्यानों द्वारा समाज को मार्गदर्शन देते थे, व्याकरण, दर्शन व वेदों के अद्वितीय विद्वान् थे। ऋषि दयानन्द के विचारों व वेदों की सेवा करते हुये आर्यसमाज बिहारीपुर बरेली की गोद मे अद्भुत विद्वान चिरनिंद्रा में सो गया।

(6) स्वामी इन्द्रदेव यती जी– आप आर्य साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान् तथा वेद वाक्यों को प्रमाणित दृष्टि से समाज के समक्ष रखने वाले परम मनीषी स्वामी इन्द्र देव यती जी ने वैदिक विचारधारा को अक्षरशः प्रसारित तो किया ही अपितु वैदिक राजधर्म के द्वारा आर्य राष्ट की परिकल्पना भी उनकी अपनी सोच थी, मूलतः पीलीभीत व बरेली के मध्य ग्राम शाही के निवासी थे, सौ वर्ष से अधिक स्वस्थ आयु को प्राप्त किया था, शाही में आपने विशाल गुरूकुल की स्थापना की थी तथा बाल विद्यामन्दिर भी स्थापित किये, जो आज भी यथावत चल रहें। आपने वृष्टि यज्ञ पर विशेष अनुसन्धान किया था व अनेकों स्थानों पर यज्ञ के द्वारा वर्षा करवाकर प्रमाणित किया, बरेली में भी मेरे संयोजन मे विशाल वृष्टि यज्ञ का आयोजन पांच दिन स्वामी जी के निर्देशन में ही किया गया था, जो पूर्ण सफल रहा।

स्वामी जी स्वतंत्रता सेनानी भी थे, स्वतंत्रता आन्दोलनों में बढ़चढ़ कर भाग लिया था।

(7) स्वामी गोपाल सरस्वती जी– चारों आश्रमों के द्वारा अपने जीवन को सार्थक करने वाले अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त महात्मा स्वामी गोपाल सरस्वती जी मूलतः बरेली में भूड स्थान के रहने वाले थे, आपकी प्रारम्भिक शिक्षा बरेली में हुई थी, स्वामी जी त्याग तपस्या से ओतप्रोत जीवन था, तीनों आश्रमों का नियमानुसार पालन करके चौथा आश्रम संन्यास के द्वारा समाज व राष्ट्र का अद्भुत अद्वितीय कार्य किया, अनेकों पुस्तकों के रचयिता

थे, सम्पूर्ण देश व विदेश में भी वैदिक धर्म का प्रचार–प्रसार किया था , अनेकों राष्ट्रीय सम्मानों से भी आपको सम्मानित भी किया गया था, आपके जीवन की विशेष बात यह थी कि मृत्यु के बाद अपने देह को राजकीय आयुर्वेदिक कालेज, बरेली को दान देने के लिये संकल्प किया जो बाद में उनका देहदान किया गया।

(8) डॉ. संतोष कण्व– वैदिक वाड्ग्मय व साहित्य के युवा सम्राट डॉ. सन्तोष कण्व का जीवन भी परम तपस्वी व आर्यसमाज की विचारधारा के लिऐ समर्पित था, आपने विवाह न करके, पंतनगर विश्वविद्यालय से सर्वोच्च शिक्षा प्राप्त करके, विश्वविद्यालय की नौकरी छोड़कर सम्पूर्ण जीवन वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार के लिये आर्यसमाज बिहारीपुर, बरेली को समर्पित कर दिया था, आर्यसमाज में ही रहना वहाँ की गतिविधियों के संचालन के साथ आर्यसमाज अनाथालय, बरेली की देखभाल, अनाथ बच्चों की सेवा करना ही उनका मूल उद्देश्य थ। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में वैदिक विचारों को प्रमाणित रुप से रखना व समाज को मार्गदर्शित करते थे, आपने कई पुस्तकों की रचना भी की थी व सैंकड़ों लेख देश की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुये हैं, श्रेष्ठ पत्रकारों में आपकी गणना की जाती थी, समाचार पत्रों में आपने भी कार्य किया था, ऋषि विचारों का कार्य करते आर्यसमाज बिहारीपुर की गोद में अपने जीवन की अन्तिम सांस ली थी।

(9) आर्य भजनोपदेश मुलरीधर जी– बरेली की पावन भूमि से अनेकों विद्वान् व विदुषियों ने राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की थी वहीं ऋषि दयानन्द से प्रभावित होकर बरेली नगर राष्ट्रीय स्तर पर भजनोपदेश के द्वारा वैदिक चिन्तन का प्रचार–प्रसार करने वाले आर्यसमाज भूड, बरेली के भजनोपदेश मुलरीधर जी ने वेदों का डंका बजा दिया था, पचास वर्ष पूर्व में भजनोपदेश के माध्यम से सैंकड़ों लोगों को वैदिक सिद्धान्तों व आर्य विचारों से ओतप्रोत कर दिया ,शहर की आर्य समाजों के अलावा ग्रामीण अंचल की आर्यसमाजों में भजनोपदेश मुलरीधर के नाम से अनेकों गांव के लोग उनका भजनोपदेश सुनने को इकट्टे हो जाते हैं, उनकी आवाज में ऐसा जादू था कि भजन, गीत जो सुन लेता था वह दीवाना हो जाता था। अत्यन्त सरल ,सिद्धान्तों में दृढ़ व महर्षि के अनन्य भक्त थे। देश के कोने–कोने में गांव–गांव पैदल चल कर, कष्ट सहन करते हुये, भूखप्यास की चिन्ता न करके भी समाज को संस्कारवान श्रेष्ठ बनाने में जीवन भर लगे रहें ।

भजनोपदेशक मुरलीधर जी का जीवन त्याग व तपस्या से ओतप्रोत अनुकरणीय जीवन था। भजनोपदेशकों में बरेली की आर्यविभूति थे।

(10) डॉ. मृदुला शर्मा– वैदुष्य से ओतप्रोत धाराप्रवाह संस्कृत, अंग्रेज़ी, हिन्दी के बोलने में सक्षम, हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेजी में एम. ए. व पीएच. डी. डॉ. मृदुला शर्मा आर्य विचारों से जीवन को सुव्यवस्थित करनेवाली बरेली की विदुषी थी, कवियित्री के रूप मे विख्यात थी, रिक्खी सिहं इन्टर कॉलेज में अंग्रेज़ी की प्रवक्ता होने पर भी हिन्दी व संस्कृत में मन्त्रमुग्ध करने वाली काव्य रचना करती थी, बड़े–बड़े मंचों पर हिन्दी व संस्कृत में काव्यपाठ करती थी, आप सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान् आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र जी की ज्येष्ठ पुत्री थी। बरेली की आर्यविभूतियों में आप आर्यसमाज के मंचों से वेदों पर व्याख्यान भी देती थी, अल्प अवस्था मे ही आप बरेली को गौरवान्वित करते हुये इस संसार से चली गई।

शेष भाग अगले अंक में....

समाचार – वीथिका

1. समस्त आर्य समाज के पदाधिकारियों (मंत्री, प्रधान) को सूचित किया जाता है कि अपने आर्य समाज से संबद्ध अथवा परिक्षेत्र में निवासरत विद्वान, वेद प्रचारक, भजनोपदेशक पुरोहित, आर्य कार्यकर्ता, समाजसेवी अथवा प्रभावशाली व्यक्तियों के नामों की सूची आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान को एक सप्ताह में प्रेषित करने का श्रम करें जिससे उन्हें आगामी आर्य महासम्मेलन हेतु आमंत्रण पत्र प्रेषित किए जा सकें। **–मंत्री–आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान।**

2. दिनांक 16–7–2023 को पूर्वीय मंडल आर्य समाज कॉलोनी जयपुर के कार्यकारिणी सदस्यों की बैठक आयोजित की जिसमें दिनांक 4 सितंबर 2023से 6 सितंबर 2023 तक तीन दिवसीय वेद पराण यज्ञ आयोजित करने का निर्णय किया गया है।

दिनांक 4 व 5 सितंबर का कार्यक्रमः– समय प्रातः काल 8.30 से 11.00 सांय काल 4.00 से 7.00 तक दिनांक 6 सितंबर 2023 को प्रातः काल के सत्र में यज्ञ की पूर्ण आहुति की जाएगी।

यज्ञ के ब्रहमा – श्री देवव्रत शास्त्री (पुरोहित)

आर्य समाज जनता कॉलोनी जयपुर

सभी धर्म प्रेमियों से नम्र निवेदन है कि तन, मन, धन से अधिकाधिक सहयोग प्रदान अनुग्रहीत करें व समय पर उपस्थित होकर धर्मलाभ अर्जित करें ।

प्रधान– श्री सतीश गुप्ता– 9352848125

मंत्री– श्री ओमप्रकाश गुप्ता– 9829205559

3. **भरतपुर** 25वां आर्य महासम्मेलन एवं श्री राम वैदिक कथा जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में रेनू मोहन घोरावल पार्षद द्वारा ध्वजारोहण करके प्रारंभ की जिसमें 2 जुलाई से 6 जुलाई तक नियमित प्रातः यज्ञ एवं दोपहर को विदुषी अंजली आर्य द्वारा श्री राम वैदिक कथा का कथा वाचन किया गया। भरतपुर जिले के अतिरिक्त राजस्थान से कोटा नागपुर, सवाई माधोपुर एवं अन्य जिलों के साथ उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश हरियाणा और अन्य प्रांतों के आर्य बंधुओं ने भाग लिया। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं राजस्थान प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान सत्यदेव आर्य द्वारा जानकारी दी गई कि यह उनका 25 वां कार्यक्रम है जिसमें जिला की टीम द्वारा तन मन धन से सहयोग किया गया। महामंत्री मान सिंह आर्य, कोषाध्यक्ष एन डी शास्त्री, राम सिंह वर्मा, ओम प्रकाश जी आर्य एवं अन्य पदाधिकारियों द्वारा पूर्ण सहयोग किया गया। यह कार्यक्रम अभिनंदन मैरिज होम पाई बाग भरतपुर में संपन्न हुआ।

अपील

राजस्थान के सभी आर्य समाजों के मंत्री व प्रधानों से निवेदन है कि वे कम से कम 10 –10 आर्य मार्तंड के ग्राहक बनाएं। ग्राहक शुल्क मात्र 100/– वार्षिक है।

– जीववर्धन शास्त्री मंत्री–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री सत्यवीर सिंह जी राजस्थान आयुर्वेद कौंसिल के सदस्य मनोनीत हुए हैं । सिंह का अभिनंदन करते हुए डॉ. मोक्षराज, डॉ. रमाशंकर शिरोमणि एवं रणजीत सिंह आर्य।

प्रो. योगेन्द्र कुमार, विभागाध्यक्ष हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला एवं डॉ. दीप्ति धामा को न्यौता देते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री जीव वर्धन शास्त्री, डॉ. सुधीर कुमार शर्मा एवं डॉ. मोक्षराज

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर आर्यसमाज, निम्बाहेड़ा एवं पतंजलि योग समिति के कार्यकर्ताओं के साथ पं. जीव वर्धन शास्त्री, डॉ. सुभाष शास्त्री एवं विक्रम आंजना आदि

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा भरतपुर के पदाधिकारीगण एवं कथावाचिका आचार्या अंजली आर्या

आर्य महासम्मेलन में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान किशनलाल गहलोत, मंत्री जीव वर्धन शास्त्री एवं रवि चड्ढा, अशोक कुमार शर्मा एवं भँवरलाल जाट का सम्मान करते हुए जिला आर्य प्रतिनिधि सभा भरतपुर के पदाधिकारीगण

डाक पंजीयन सं. जयपुर सिटी/214/2023-25 आर. एन. आई नं.10471/60

कुशलगढ़ विधायक एवं जनजाति आयोग की उपाध्यक्ष श्रीमती रमीला हुरतिंग खडिया के आवास पर उनके पति की स्मृति में आयोजित यज्ञ में आहुति देते हुए विधायक खडिया एवं आशीर्वाद देते हुए यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य जीव वर्धन शास्त्री

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सणपा पंचायत समिति सिणधरी जिला बाड़मेर में वेद प्रचार रथ के संचालक स्वामी चेतनानंद सरस्वती जी के द्वारा विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा का प्रवचन, साथ में प्रधानाध्यापक श्री बाबूलाल जी प्रजापति और अध्यापक श्री दुदाराम जी चौधरी।

प्रेषकः-

सम्पादक
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर-302004

प्रेषित